५०. भीमराज्ञः कथा

नत्वाहं केवलज्ञान-लोचनं श्रीजिनेश्वरम्। वक्ष्ये भीमनृपाख्यानं सतां वैराग्यकारणम् ॥१॥
कांपिल्यनगरे राजा भीमो भीमाशयः कुधीः। सोमश्रीर्भामिनी तस्यां भीमदासः सुतोभवत् ॥२॥
कुलक्रमागतत्त्वाच्च नन्दीश्वरमहाविधौ। जीवघातनिषेधस्य दापिता तेन घोषणा ॥३॥
तत्र तेनैव भीमेन मांसासक्तेन पापिना। सूपकारः स्वयं मांसं याचितो दुष्टचेतसा ॥४॥
सोपि बालं श्मशानाच्च समानीय मृतं तदा। भूपतेस्तस्य संस्कृत्य ददौ भीमस्य पापिनः ॥५॥
तद्भक्षणात्तदा भीमो जिह्वादुस्वादुलम्पटः। सूपकारं प्रति प्राह कस्मान्मृष्टमिदं वद ॥६॥
लब्धाभयेन तेनापि प्रोक्ते तस्मिन्कुकर्मणि। भीमो जगाद मे देहि तदेवं नरजंगलम् ॥७॥
सूपकारस्तदा पापी लड्डुकादिप्रवञ्चनैः। नित्यमेकं कुधीर्बालं जनानां हन्ति तत्कृते ॥८॥
यस्तु पापीजनो लोके संगतिस्तस्य तादृशी। यथा भीमस्य सम्पन्नः सूपकारोतिपापधीः ॥९॥

---

५०. भीमराज की कथा

केवलज्ञानरूपी नेत्रों की अपूर्व शोभा को धारण किए हुए श्रीजिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर भीमराज की कथा लिखी जाती है, जिसे सुनकर सत्पुरुषों को इस दुःखमय संसार से वैराग्य होगा ॥१॥

कांपिल्य नगर में भीम नाम का एक राजा हो गया है। वह दुर्बुद्धि बड़ा पापी था। उसकी रानी का नाम सोमश्री था। इसके भीमदास नाम का एक लड़का था। भीम ने कुल-क्रम के अनुसार नन्दीश्वर पर्व में मुनादी पिटवाई कि कोई इस पर्व में जीवहिंसा न करें। राजा ने मुनादी तो पिटवा दी, पर स्वयं महा लम्पटी था। मांस खाये बिना उसे एक दिन भी चैन नहीं पड़ता था। उसने इस पर्व में भी अपने रसोइये से मांस पकाने को कहा। पर दुकानें सब बन्द थीं, अतः उसे बड़ी चिन्ता हुई वह मांस लाये कहाँ से? तब उसने एक युक्ति की। वह मसान से एक बच्चे की लाश उठा लाया और उसे पकाकर राजा को खिलाया। राजा को वह मांस बड़ा ही अच्छा लगा। तब उसने रसोइये से कहा–क्यों रे, आज यह मांस और दिनों की अपेक्षा इतना स्वादिष्ट क्यों हैं? रसोइये ने डरकर सच्ची बात राजा से कह दी। राजा ने तब उससे कहा–आज से तू बालकों का ही मांस पकाया करना ॥२-७॥

राजा ने तो झट से कह दिया कि अब से बालकों का ही मांस खाने के लिए पकाया करना पर रसोइये को इसकी बड़ी चिन्ता हुई कि वह रोज-रोज बालकों को लाये कहाँ से? और राजाज्ञा का पालन होना ही चाहिए। तब उसने यह प्रयत्न किया कि रोज शाम के वक्त शहर के मुहल्लों में जाना जहाँ बच्चे खेल रहे हों उन्हें मिठाई का लोभ देकर झट से किसी एक को पकड़ कर उठा लाना। इसी तरह वह रोज-रोज एक बच्चे की जान लेने लगा। सच है–पापी लोगों की संगति दूसरों को भी पापी बना देती है। जैसे भीमराज की संगति से उसका रसोइया भी उसी के सरीखा पापी हो गया ॥८-९॥

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ज्ञात्वा जनेन तत्सर्वं तयोः पापप्रचेष्टितम्। प्रोक्तं मंत्रिकुमाराणां ततस्तैर्नीतिवेदिभिः ॥१०॥
भीमदासो विशिष्टात्मा राजपुत्रो महोत्सवैः। राज्ये संस्थापितो भक्त्या प्रजानां हितकारकः ॥११॥
कांपिल्यनगरात्सोपि भीमो दुष्टाशयो द्रुतम्। निर्घाटितः कुधीस्तेन सूपकारेण संयुतः ॥१२॥
पापिनः स्वप्रजापुत्रमित्रमंत्र्यादयो जनाः। सर्वे स्युर्बान्धवाश्चापि शत्रवो नात्र संशयः ॥१३॥
ततस्तेन च भीमेन कानने सूपकारकः। महाक्षुधातुरेणाशु भक्षितः पापकर्मणा ॥१४॥
सोपि भीमः स्वपापेन मेखलाख्यपुरं गतः। मारितो वसुदेवेन संप्राप्तो नरकं ततः ॥१५॥

विगतधर्ममतिर्भवसागरे पतति कर्मकलंकवशीकृतः।
बुधजनाश्च ततो वरशर्मणे शुभकरं जिनधर्म भजन्तु वै ॥१६॥

इति कथाकोशे रसनेन्द्रियलुब्धभीमराज्ञः कथा समाप्ता।

५१. नागदत्तायाः कथा

श्रीजिनं त्रिजगत्स्वामिसमर्चितपदद्वयम्। नत्वाहं नागदत्तायाश्चरित्रं रचयामि च ॥१॥
आभीराख्यमहादेशे नासक्यनगरे वरे। वणिक्सागरदत्तोभून्नागदत्ता च तत्प्रिया ॥२॥

बालकों को प्रतिदिन इस प्रकार एकाएक गायब होने से शहर में बड़ी हलचल मच गई सब इसका पता लगाने की कोशिश में लगे। एक दिन इधर तो रसोइया को चुपके से एक गृहस्थ के बालक को उठाकर चला कि पीछे से उसे किसी ने देख लिया। रसोइया झट-पट पकड़ लिया गया। उससे जब पूछा गया तो उसने सब बातें सच्ची-सच्ची बतला दीं। यह बात मंत्रियों के पास पहुँची। उन्होंने सलाह कर भीमदास को अपना राजा बनाया और भीम को रसोइये के साथ शहर से निकाल बाहर किया। सच है, पापियों का कोई साथ नहीं देता। माता, पुत्र, भाई, बहिन, मित्र, मंत्री, प्रजा आदि सब ही विरुद्ध होकर उसके शत्रु बन जाते हैं ॥१०-१३॥

भीम यहाँ से चलकर अपने रसोइये के साथ एक जंगल में पहुँचा। यहाँ इसे बहुत ही भूख लगी। इसके पास खाने को कुछ नहीं था। तब यह अपने रसोइये को ही मारकर खा गया। यहाँ से घूमता-फिरता यह मेखलपुर पहुँचा और वहाँ वासुदेव के हाथ मारा जाकर नरक गया ॥१४-१५॥

अधर्मी पुरुष अपने ही पापकर्मों से संसार-समुद्र में रुलते हैं। इसलिए सुख की चाह करने वाले बुद्धिमानों को चाहिए कि वे सुख के स्थान जैनधर्म का पालन करें ॥१६॥

५१. नागदत्ता की कथा

देवों, विद्याधरों, चक्रवर्तियों और राजाओं, महाराजाओं द्वारा पूजा किए गए भगवान् के चरणों को नमस्कार कर नागदत्ता की कथा लिखी जाती है ॥१॥

आभीर देश नासक्य नगर में सागरदत्त नाम का एक सेठ रहता था। उसकी स्त्री का नाम नागदत्त था। इसके एक लड़का और एक लड़की थी ॥२॥

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY